आनन्द निकेतन : नई तालीम का एक प्रयोग

सुषमा शर्मा से ऋषभ कुमार मिश्र की बातचीत

नई तालीम की बात हो और सामयिक संदर्भों में इसके परिष्कार और आंतरिक सामंजस्य पर विचार करना हो तो मन में कई सैद्धान्तिक सरोकार और अनुभव की कसौटी पर इन्हें कस कर देखते हुए कुछ वैकल्पिक प्रयोगों की टोह लेने का विचार सहज ही उठता है। ऐसे ही कुछ सरोकारों, जिज्ञासाओं और प्रेरणाओं को तलाशता यह साक्षात्कार सुश्री सुषमा शर्मा, आनन्द निकेतन विद्यालय, संचालिका से रू-बरू होता है।

प्रश्न : वर्ष 2005 में सेवाग्राम में नई तालीम के सिद्धान्त पर आधारित बुनियादी विद्यालय आरंभ हुआ। इस दौरान आप लोगों ने किन संदर्भों को रेखांकित किया? विद्यालय के लक्ष्य और स्वरूप को कैसे तय किया और कैसे इस विद्यालय की यात्रा आरंभ हुई?

उत्तर : वर्ष 2004 में आशा देवी आर्यनायकम् की जन्म शताब्दी मनायी जा रही थी। इस अवसर पर सेवाग्राम में नई तालीम से जुड़े कार्यकर्ताओं का सम्मेलन हुआ। इस सम्मेलन में देश भर से आए हुए कार्यकर्ताओं का मानना था कि नई तालीम पद्धति के साथ शिक्षा का कार्य शुरू करना अतिआवश्यक है। अतः दुबारा से सेवाग्राम में नई तालीम का प्रयोग आरंभ हो। इसके साथ-साथ कुछ और घटनाएं भी घटित हो रही थी। इसी समय शिक्षाविदों और नीति निर्माताओं में भी नई तालीम को देखने का नज़रिया नए सिरे से खुल रहा था। इसके लिए दो व्यक्तियों का योगदान महत्वपूर्ण है- प्रो. कृष्ण कुमार जो उस समय एनसीईआरटी के निदेशक थे और डॉ. अनिल सद्गोपाल जो इसको नेतृत्व दे रहे थे। इसी वक़्त एक और बात हो रही थी, महाराष्ट्र के एक शिक्षाविद् रमेश पानसे नई तालीम के इतिहास पर शोध करने के लिए सेवाग्राम में रह रहे थे। इस दौरान, लगभग ढाई-तीन साल तक, वे वर्धा के गाँधी मार्गी कार्यकर्ताओं से अपने विचार साझा कर रहे थे। इस माहौल में एक वैचारिक परिवेश बन रहा था कि फिर से नई तालीम का विद्यालय खोला जाए। उस समय नई तालीम समिति के अध्यक्ष कनकमल गाँधी थे। शिवदत्त उस समय नई तालीम के ऊपर एक अच्छी किताब तैयार कर रहे थे। कुल मिलाकर एक तरफ नई तालीम की उपलब्धियों पर शोध और समीक्षा चल रही थी। उसके लिए वैचारिक तैयारी हो चुकी थी। नई तालीम समिति को भी लग रहा था कि आनंद निकेतन विद्यालय आरंभ किया जाए। मन में थोड़ा संशय था कि बिना तैयारी या आधी-अधूरी पृष्ठभूमि में विद्यालय कैसे शुरू किया जाए। उस वक्त रमेश पानसे जी ने कहा कि भले ही हमारी पूर्ण तैयारी न हो, समय के साथ तैयारी हो जाएगी। विकास की प्रक्रिया में संसाधन और संरचनाएं तैयार होती रहेगी। इन परिस्थितियों में हमने स्कूल शुरू करने का फैसला किया।

मैं उन दिनों चेतना विकास संस्था के साथ वर्धा के ग्रामीण समुदाय के बीच काम कर रही थी। मेरा कार्यक्षेत्र अनौपचारिक शिक्षा था। इस स्कूल को आरंभ करने की जो सारी वैचारिक प्रक्रिया हो रही थी उसमें मैं भी

शामिल थी। जब यहाँ पर विद्यालय खोलने का निर्णय हुआ और इसकी ज़िम्मेदारी उठाने का सवाल पैदा हुआ तो मेरा नाम सुझाया गया। मैं अनौपचारिक शिक्षा के क्षेत्र में नई तालीम के सिद्धान्तों के अनुरूप कार्य कर रही थी। मेरे पास बालवाड़ी से 14 साल तक बच्चों के साथ स्कूल के बाहर के समय में शैक्षिक कार्यक्रमों के आयोजन का अनुभव था। ये सारे कार्य करते समय मेरी दृष्टि स्पष्ट हुई कि किताबी शिक्षा तो बेमतलब है उसको जीवन के साथ जोड़ने की आवश्यकता है। मैं खुद उन दिनों ''उत्पीड़तों का शिक्षाशास्त्र'' जैसी किताबें पढ़ रही थी। उसमें दिए विचारों पर मनन कर रही थी। इवान इलिच, जॉन हॉल्ट के विचारों से भी परिचित हुई थी। गाँधी और विनोबा की किताबें पढ़ना थोड़ा मेरे लिए स्वाभाविक था। मेरे परिवार और पेशेवर जीवन में उनकी स्वाभाविक उपस्थिति थी। इन परिस्थितियों में समुदाय और गाँव के क्षेत्रानुभव और वैचारिक तैयारी के साथ मैं विद्यालय की योजना से जुड़ी। हमने जब स्कूल खोलने का निर्णय लिया था तब लगभग 15 साल का गाँव में काम करने का मेरा अनुभव हो चुका था। यहाँ एक बात जोड़ना चाहूँगी कि चेतना विकास संस्था में काम करने के दौरान भी एक विद्यालय खोलने की योजना बनी थी। कुछ चुनौतियों के कारण वह क्रियान्वित नहीं हो पा रही थी। इस विद्यालय से जुड़ना उस योजना को क्रियान्वित करने की अभिप्रेरणा से भी था।

प्रश्न : जब आपने यह फैसला किया कि यह स्कूल नई तालीम की पद्धति के अनुसार खुलेगा तो उस समय आपने नई तालीम को लेकर जो ख़ाका बनाया था, उस पर प्रकाश डालिए।

उत्तर : हम लोगों ने नई तालीम की विचार और पद्धति के बारे में काफ़ी पढ़ लिया था पर विद्यालय कैसे चलना है इसके बारे में व्यवस्थित ढाँचा तैयार नहीं था। हमारे आस-पास कोई विद्यालय ऐसा नहीं था जहाँ पर जीवोन्मुखी शिक्षा दी जा रही हो, जिसमें जीवन से जुड़ी गतिविधियों और क्राफ़्ट को स्थान दिया गया हो, जिसका हम अनुकरण कर सकें या जो हमें कार्य आरंभ करने की दिशा दे। हम लोगों को इन्हीं घटकों को अपने विद्यालय में स्थान देना है यह सोच स्पष्ट थी। समवाय कैसे करना है, बच्चों के परिवेश से कैसे जोड़ना है; इसकी पद्धति और प्रक्रिया की क्रियात्मक तैयारी बहुत अधिक नहीं थी। हमने तय किया शिक्षाशास्त्र के वर्तमान अभ्यासों को भी नई तालीम से जोड़ते हैं। उस समय पूरे देश में 'रचनावाद' की चर्चा ज़ोर पकड़ चुकी थी। आनुभाविक अधिगम को महत्व दिया जा रहा था। शिक्षा और समुदाय के रिश्तों को मज़बूत करने पर विचार हो रहा था। हमारे सामने शाश्वत विकास की समस्या खड़ी हो चुकी थी। हमने भी तय किया कि इन बातों विमर्शों को हम अपने विद्यालय में स्थान देंगे। आज के संदर्भ में हमें क्राफ्ट को भी डिज़ाइन करना होगा। इन्हें ध्यान में रखते हुए कार्य आरंभ हुआ लेकिन हमने नई तालीम की कुछ बातों को देश-काल परिस्थितियों के अनुसार नहीं भी अपनाया। हमने क्राफ्ट को सीखने के केन्द्र में रखते हुए तय किया कि इस विद्यालय में समुदाय आधारित सीखने को शामिल करना होगा। हमने आनंद निकेतन को नेबरहुड स्कूल की तरह आरंभ किया। यह लक्ष्य रखा कि इसमें नई तालीम के सारे तत्वों को लाने की कोशिश करेंगे।

शुरुआत के समय में बहुत छोटी-सी टीम थी क्योंकि इस व्यवस्था में शिक्षक बनना कोई आसान काम नहीं है। नई तालीम की तरह का विद्यालय बनने का मतलब यह था कि शिक्षकों को इसके तरीके सिखाए जाएं। इसके लिए टीम तैयार थी। शुरुआत के समय में रमेश पानसे जी जैसे नई तालीम से जुड़े लोगों ने शिक्षकों को तैयार करने काम किया। जया ताई, जयश्री ताई और मैं इसके साथ बालवाड़ी की टीचर इस तरह हम पाँच लोगों ने शुरुआत की और फिर धीरे-धीरे लोग बढ़ते गए। हम सब लोग प्रयोग करते, साथ में बैठते, उन पर बात करते, किताब, लेख डॉक्यूमेंट आदि पढ़ते। इसके आधार पर पाठ्यचर्या की मैपिंग करते और उसके क्रियान्वयन की योजना बनाते। हमने छोटे-छोटे वर्कशॉप आपस में किए। ज़रूरत के हिसाब से बाहर से भी लोगों को बुलाते थे जैसे चेतना विकास से कृषि और भाषा के लिए एक मीना ताई आती थीं। सामूहिक भागीदारी के प्रयोग के लिए मोहन भाई हीरालाल हमारे साथ थे। इस विद्यालय के पूर्व विद्यार्थी रहे कला शिक्षक अम्बुलकर गजानन को भी हम बुलाते थे। वे नई तालीम के ही पूर्व विद्यार्थी थे। उस समय की नई तालीम के बारे में अपने अनुभव वह उस समय की नई तालीम की पूरी प्रकृति के बारे में बताते थे। वे प्रायोगिक तौर पर बताते कि कैसे समवाय स्थापित करना है? इन लोगों के मार्गदर्शन, आपसी सहयोग के हिसाब से हम आगे बढ़ते गए।

प्रश्न : वर्तमान में शिल्प और विषय के सहसंबंध और समवाय की अवधारणा को कैसे देखें? आनंद निकेतन विद्यालय में कैसे विषय और उत्पादक कार्य को एकीकृत किया जा रहा है?

उत्तर : समवाय के बारे में सबसे पहले स्पष्ट कर दूँ कि यह पद्धति व्यावसायिक प्रशिक्षण और अकादमिक विषयों में कोई भेद नहीं करती है। नई तालीम का मतलब ही है समग्र शिक्षा। समग्र शिक्षा के लिए समवाय होना चाहिए। यह नई तालीम का सर्वप्रमुख पक्ष है। हमारे सामने समस्या थी कि समवाय के बारे में प्रयोगों को कोई विस्तृत दस्तावेज़ उस समय हमारे पास नहीं था। हमने अपनी ही समझबूझ से समवाय आरंभ किया। मैंने गाँवों में अनौपचारिक शिक्षा के प्रयोग के समय थोड़ा समवाय पर काम किया था। ऐसा समझ में आया कि यह कोई ऐसा तरीका नहीं है कि जिसे डी.एड., बी.एड. में सिखाया जाए या जो डी.एड. और बी.एड. करके आया वह समवाय कर ले। हमने शिक्षकों के साथ गणित, भाषा और विज्ञान विषयों को लेकर प्रयोग आरंभ किया। उन्हें प्रेरित किया कि वे समझे और जानें कि जीवन और अलग-अलग विषयों का एक गहरा रिश्ता होता है। इस रिश्ते को सर्वांगीण रूप में देखना चाहिए। इसके लिए हमें काफ़ी ''करके देखना'' पड़ा। किससे, कैसे जोड़ना है यह विचार किया, प्रयोग किया, उसका आकलन किया। उन दिनों हमें यह भी समझ नहीं आता था कि जो हम करना चाहते हैं वह किस उम्र के बच्चे कर सकेंगे? किस उम्र के बच्चों को इससे सीखने में मदद मिलेगी? हम सभी नई तालीम से सीख रहे थे। बच्चे भी नई तालीम से सीख रहे थे। जब बालवाड़ी से कक्षा 4 का एक चक्र पूरा हुआ तब हमारे पास पर्याप्त अनुभव हो गया। यह अनुभव आगे की कक्षाओं में जुड़ता गया। हमने प्रयोगों को जारी रखा। हर बार करते, कुछ नया जोड़ते, पुराने में संशोधन करते। इस दौरान सबसे बड़ी दिक्कत थी शिक्षकों का बदल जाना। आरंभ में जिन महिला शिक्षकों को तैयार किया उनका विवाह हो गया। ऐसे ही कुछ शिक्षक परिषदीय विद्यालयों में चले गए।

प्रश्न : नई तालीम साहित्य में बार-बार समुदाय के साथ सीखने का उल्लेख किया जाता है। इसके लिए आपने क्या-क्या प्रयोग किये इस पर प्रकाश डालिए।

उत्तर : इस क्षेत्र में हमने कुछ काम किए और कुछ काम नहीं कर पाए। जब हमने स्कूल शुरू किया तो समझ में आया कि अब गाँव नाम मात्र का बचा है लेकिन गाँव में रहने वाले लोग गाँव के निवासी नहीं है। अब गाँव में रहने वालों में कई लोग बाहर गाँव से आए हुए भी हैं। यहाँ पर ऑर्गनिक कम्युनिटी नहीं है। समुदाय में हमारे विद्यालय से जुड़ने में झिझक थी। वे हमसे सवाल करते कि इस विद्यालय में प्रवेश कराने पर उनका बच्चा पीछे तो नहीं जायेगा। हमारे सामने इस तरह की चुनौतियाँ थी। हमारे स्कूल में आने वाले बच्चे कम थे दूसरे स्कूलों में जाने वाले बच्चे अधिक थे। आप सीखने की प्रक्रिया में समुदाय को तभी जोड़ सकते हैं जब आपके पास स्थानीय समुदाय के बच्चे आएं। हमारे साथ ऐसा नहीं था इसलिए हमने सोचा कि वे कौन से मुद्दे हैं जिन्हें लेकर समुदाय के साथ कार्य कर सकते हैं। हमने 'वेस्ट मैनेजमेंट' पर काम किया। इस काम को लेकर हम समुदाय के पास गए। फिर किसानों से जुड़े विषयों में कई कार्य किए। हम नुक्कड़-नाटक के माध्यम से समुदाय में जाते और स्कूल के कामों को देखने और जानने के लिए समुदाय को बुलाते हैं। वर्तमान में हमने वृक्ष बचाओ आंदोलन के माध्यम से बस्ती के लोगों को जोड़ा। हमने बच्चों के किए कामों की प्रर्दशनी लगायी। हमने अपने कार्यक्रमों, ख़ासकर जात्राओं, में शिक्षा और समाज के मुद्दों पर बात की।

प्रश्न : जब भी नई तालीम की बात की जाती है तो कई बार हम व्यावसायिक शिक्षा और नई तालीम को एक-दूसरे का पर्यायवाची मानने लगते हैं। इस भ्रम की स्थिति पर आपका क्या मत है?

उत्तर : व्यावसायिक शिक्षा बहुत ही सीमित चीज़ है। इसका मतलब ही होता है कि एक औद्योगिक दुनिया की समझ होना जिसमें एक काम करने वाले व्यक्ति को विशिष्ट कुशलता के लिए तैयार करना होता है। मैं शिक्षा की इस भूमिका को कम नहीं मानती लेकिन यह विचार करना जरूरी है कि औद्योगिक प्रशिक्षण के लिए कब तैयार किया जाए और उसका स्वरूप क्या होगा? मैं ऐसा मानती हूँ प्राथमिक कक्षाओं में व्यावसायिक शिक्षा लाना बिल्कुल गलत है। इसे 15-17 साल की शिक्षा के बाद देना चाहिए। आरंभिक कक्षाओं में समवाय के स्थान पर व्यावसायिक शिक्षा को देना बच्चों के समग्र विकास के स्थान पर उन्हें श्रमिक बनाने की ओर ढकेलता है। हमें उन्हें केवल कुशलता नहीं देना है

यह भी ध्यान रखना है कि बच्चों में विश्लेषणात्मक सोच होनी चाहिए, सामाजिक आयामों की समझ आनी चाहिए। आलोचनात्मक चिंतक के रूप में बच्चा विकसित होना चाहिए।

प्रश्न : जब भी नई तालीम के बारे में लिखा जाता है तो इसकी एक रोमांटिक दुनिया को सामने रखा जाता है कि बच्चे खेत में काम कर रहे हैं, वे आनंदित हैं आदि। नई तालीम की शिक्षण पद्धति में दिखने वाली रोमांटिक दुनिया और समग्र विकास का जो लक्ष्य है इसके फर्क को कैसे समझा जाए?

उत्तर : मुझे ऐसा लगता है कि इसको रोमांटिसिज्म के हिसाब से नहीं देखना चाहिए बल्कि एक अपरिहार्य प्रयास की तरह ज़रुर देखना चाहिए। नई तालीम क्या है? नई तालीम का लक्ष्य और हमारी ज़िंदगी का लक्ष्य समान है। हम अपने विकास को कैसे देखते हैं? हमारे ज़िंदगी में, हमारे बच्चों की ज़िंदगी में क्या चीज़ें आनी चाहिए? अगर इसके बारे में गहराई से सोचेंगे तो हमें लगता है कि पूर्णरूप से समानता, अहिंसा और न्याय-आधारित समाज को हम अपने बच्चों के लिए आदर्श मानेंगे। उदाहरण के लिए हर अभिभावक चाहता है कि उसका बच्चा अपने ज्ञानेन्द्रियों का सृजनात्मक तरीक़े से इस्तेमाल करना सीखे। हर अभिभावक चाहता है बच्चे के भाव और संज्ञान का विकास हो। हर अभिभावक चाहता है कि बच्चे संवेदनशील बनें। इसके आधार पर नई तालीम को समझना है। यह कोई उपभोग की वस्तु मात्र नहीं है। इसमें सहकार और सहजीवन है। सृजनशील नई तालीम एकदम आसानी से आ जाने वाली शिक्षा नहीं है। इसके लिए शिक्षक को गढ़ना होता है, उसे क्रिएटिव बनाना पड़ता है। यदि नई तालीम भी ढर्रे वाली शिक्षा बन जाए तो हम चीज़ें दोहराएंगे नया नहीं कर पाएंगे। इसमें बच्चे और शिक्षक के बहुत ज्यादा क्रिएटिव होने की संभावना है।

प्रश्न : प्रायः कहा जाता है कि आर्थिक और वैश्वीकृत दुनिया में हम सभी एक ही मॉडल में ढलते जा रहे हैं। ऐसे समय में हमारी शिक्षा और जीवन के संदर्भ में नई तालीम और गाँधी की प्रासंगिकता को आप कैसे देखती हैं?

उत्तर : आप ठीक कह रहे हैं। आज की दुनिया में हम सभी उत्पाद और उपभोक्ता बनते जा रहे हैं। हमारा खुद के जीवन से नियंत्रण समाप्त होता जा रहा है। प्राकृतिक संसाधनों का दोहन ही हमारे लिए अंतिम सत्य बन चुका है। इन परिस्थितियों में ऐसा लगता है कि हमारे पास कोई चुनाव ही नहीं बचा है। सत्ता और पूँजी केन्द्रित होती जा रही है। इन परिस्थितियों में आम आदमी फँस चुका है। उसे इस बात का बोध है कि वह सोचने वाला इंसान है लेकिन उसकी सोच कैसे दूसरों से नियंत्रित होती जा रही है इसका विवेक आवश्यक है। हमें ध्यान रखना ज़रूरी है कि हम सब एक-दूसरे से जुड़े हुए हैं। प्रकृति और इंसानों का हित अलग-अलग नहीं है। इन रिश्तों में जब हम संतुलन खोते हैं तो एक तरह से हम खुद को भी नष्ट करते हैं। हमें प्रत्यक्षतः खुद का विनाश नहीं दिखता लेकिन वह हो रहा होता है। इन परिस्थितियों में अलग दिशा लेनी पड़ेगी जो हमें उपभोग प्रधानता से हटाकर विवेक दे कि ज़रूरत क्या है और लालच क्या है? हम रिश्तों को बेहतर बनाने के तरीके ढूँढ़ सकें। हम खुद से परे दूसरों की खुशियों में आनंद ले सकें। हम मानें कि दुनिया अधिकार करने की वस्तु नहीं है बल्कि हमें इसे बेहतर बनाना है। हमें दूसरों को नियंत्रित करने के स्थान पर उन्हें निखारने में मदद करें। अगर हम यह सब कर पाते हैं तो जीवन निश्चित रूप से सुंदर बनेगा। यही गाँधी और नई तालीम का तत्व है। आज की परिस्थितियों के हिसाब से सबके हित का चिंतन करते हुए सत्य की खोज़ और रक्षा का क्रम जारी रखें। इससे हम एक बेहतर दिशा में बढ़ेंगे। ◆

ऋषभ कुमार मिश्र : सहायक प्रोफेसर, शिक्षा विभाग, महात्मा गाँधी अंतर्राष्ट्रीय हिन्दी विश्वविद्यालय, वर्धा।
संपर्क : 7057392903; rishabhrkm@gmail.com

सुषमा शर्मा : आनंद निकेतन विद्यालय, सेवाग्राम की संचालिका हैं। इनके पास अनौपचारिक शिक्षा व महिला सशक्तिकरण के क्षेत्र में वृहद् अनुभव है। इनके नेतृत्व में आनंद निकेतन विद्यालय नई तालीम के सिद्धांतों पर आधारित प्रयोगों को साकार कर रहा है।
संपर्क : sushama.anwda@gmail.com